International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 3,March- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संत सुन्दरदास के काव्य में वैराग्य तत्त्व

Savita Hooda
Assistant Professor (Hindi)
Govt. College For Women, Sampla
Email Id :siyahooda01@gmail.com

शोध–सार

संत सुन्दरदास जन्म स भी और कर्म से भी वैरागी थे। उनके लिए यह जगत् भ्रम के अतिरिक्त और कुछ भी प्रतीत नहीं होता है। उन्होनें आजीवन ब्रह्मचार्य का पालन करते हुए जगत् को प्रकृति की मात्र कीड़ा स्थल का ही अनुभव किया। संभी संतों ने मोह–ममता से दूर रहने का संदेश दिया। संत सुन्दरदास स्वयं एक ब्राह्मी समाज की स्थापना करनी चाहते थे, किंतु समाज के आधे वर्ग नारी का बहिष्कार कर वे अपने उद्देश्य में कैसे सफल हो पाते। इसका कारण उनका वैराग्य जीवन ही रहा। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके निषेध में ही एक सकारात्मक पहलू तिरोहित हो या उनकी दृष्टि मे एक ऐसे समाज का निर्माण रहा हो जिसका आधार अध्यात्म पर रहा हो। संत सुन्दरदास के काव्य में इस बात पर जोर दिया गया है कि मनुष्य को काम–वासना से मुक्त रहना चाहिए। संत सुन्दरदास के साथ–साथ सभी संतों ने अनियंत्रित काम वासना से दूर रहने का संदेश दिया।

संत सुन्दरदास का मानना है कि यह जगत् एक स्वप्न के समान ह। इस जगत् में मिलने व बिछड़ने वाला वह एक क्षण ही सत्य है। इसका अर्थ है वह क्षण मोह का होता है और वह मोह का बन्धन टूटते ही सब कुछ स्वप्न जैसा प्रतीत होने लगता है। स्वप्न व्यक्ति को राजा भी बना सकता है और रंक भी। यह जगत् भी एक स्वप्न के समान है। इसमें जीवन भी है, मृत्यु भी है। तीर्थ, व्रत, यम, नियम, दान, पुण्य सभी स्वप्न है। सत्य तो एक साथ वह महा ऊर्जा है जो अविकल है असम्पृक्त है। संत सुन्दरदास कहते है कि –

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 3,March- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

"स्वप्न सकल संसार है, स्वप्ना तीन्हु लोक।

सुन्दर जान्यौ स्वप्न तै, तब सब जान्यो फोक।।"[1]

संत सुन्दरदास सम्प्रदायों को व सम्प्रदायवाद को भी भ्रम ही मानते हैं –

"चिह्न बिना यहाँ सब कोई आए।

यहाँ भए दोइ पन्थ चलाए।।

हिन्दू तुरक उठयौ यह भर्मा।

हम दोऊँ का छाड़या धर्मा।।"[2]

संत सुन्दरदास ने तो कृत्य कर्मो के बारे में कहते हैं, न वे कलमा पढ़ने में विश्वास करते हैं। न वे यज्ञाववीत पहले हैं, न वे सुन्नत कराकर उन्मुक्त होते हैं। संत सुन्दरदास ने सहजभाव से ब्रह्मग्नि को प्रज्ज्वलित किया और सहज समाधि उन्मनी अवस्था में लौ लगा रखी है। वे ऐसी ही सहज समाधि को वास्तविक मानते हैं। शेष सभी कार्यों को वे माया के अंग मानते है अर्थात् अर्थहीन मानते हैं।

संत सुन्दरदास का मानना है कि वैराग्य जीवन गृहस्थ से श्रेष्ठ है। उनका मानना है कि वैरागी के धर्म की रक्षा गृहस्थ वाले करते हैं और गृहस्थ वालों को मुक्ति का मार्ग वैरागी दिखाते हैं। जिस प्रकार सिंह की रक्षा वन करता है, पर वन का उच्छेदनसिंह के भय से लोग नहीं कर पाते अर्थात् सिंह वन की रक्षा करता है। समाज को दिशा दिखाता है तो दूसरा योग्य क्षेय की व्यवस्था करता है।

संत सुन्दरदास का मानना है कि वैराग्य ज्ञान प्राप्ति का मार्ग है। इस जगत् में अनेक मनुष्य मुक्ति प्राप्त करने का प्रयास करते हुए दिखाइ पड़ते हैं। वे ऐसे मार्ग चले जाते है जहाँ वे संसार को छोड़कर भी और अनेक बंधनों में बंध जाता है। मनुष्य मुक्ति प्राप्त करने के लिए व्रत, तीर्थ, तप, यज्ञ, योग, आदि का सहारा लेते हैं, किंतु जब तक मनुष्य को

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 3,March- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आत्मज्ञान न हो तो वह उसी अवस्था में होता है जैसे पहाड़ से गिरे तो कुएँ में पड़े। कुछ लोग बाल उखवाकर, बाल बढ़ाकर या शरीर में विभुति लपेटकर फिरते हैं, लेकिन जब तक आत्मज्ञान नही ंतब तक हृदय की गाँठ छूटने वाली नहीं है। ऐसे लोग भ्रम के साथ ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते है। ऐसे लोग वैरागी तो हो जाते जप–तप करने लग जाते है किंतु न तो उनका मन बदलता, न कर्म, न वच बदलता। न मन का भ्रम गया, न कपट। संत सुन्दरदास वास्तविक वैराग्य मार्ग की ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि –

"काहे कौ तू नर भेष बनावत काहे कौ तू दशहूँ दिश डलै।

काहे कौ तू तनु कष्ट करै अति काहै का तू मुख ते कहि फूलै।।

काहे कौ और उपाइ करै अब आन क्रिया करिकै मति भूलै।

सुन्दर एक भजै भगवन्तहिं तौ सुख सागर में नित झूलै।।"[3]

संत सुन्दरदास का मानना है वैराग्य के लिए निमित्त चित्त शुद्धि आवश्यक है। लोग वैरागी होकर भी अन्तर से मिलन ही रहते हैं। वास्तविक साधना और वैराग्य पथ यथार्थ की समझदारी है। हमारा जीवन मात्र इतना है–

"सुन्दर पंछी विरह पर लियो बसेरा आनि।

राति रहे दिन उठ गए, त्यौं कुटुम्ब सब जाने।।"[4]

संत सुन्दरदास कहते है कि मानव जीवन बहुत मुश्किल से मिला है। यह मनुष्य के लिए सबसे बड़ा अवसर है इसलिए आत्मतत्त्व को ब्राह्मत्व में विलीन करने पर मनुष्य को ध्यान देना चाहिए। वे कहते हैं कि –

"सुन्दर यह अवसर भलो भजले सिरजन हार।

जैसे तातें लोह कौं, लेत मिलाइ लुहार।।"[5]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 3,March- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जब तक मनुष्य को कर्मों के बंधन से मुक्ति नहीं मिलती, बत तक ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है। कृत कर्मों का फल अवश्य ही भुगतना पड़ता है। ज्ञान तो स्वयं की ही प्राप्ति है। मन को आइने की तरह प्रयुक्त करिए तब भी, उसका मुख उल्टा होने से स्वरूप ज्ञान सम्भव नहीं है। वे कहते हैं कि –

"सुन्दर कहत एक रवि के प्रकाश बिन
जै गने ही जोति कहा रजनी विलात है।।[6]

यह मनुष्य जीवन बडो मुश्किल से प्राप्त होता है। इसलिए इसका विकास बहुत ही रहस्यपूर्ण है। परमात्मा ने जीव की उत्पत्ति बड़े ही रहस्यमय ढंग से की है। जठराग्नि से भरभूर पेट की ऊपरी तह पर स्थित गर्भाशय में रज–शुक्र बिन्दु से मानव विकास की यात्रा आरम्भ होती है। अग्नि के बीच जल की यह जमावट क्या आश्चर्य का कारण नहीं है, सौन्दर्यान्वित, आभापूर्ण अंग प्रत्यंगों का विकास, देखने में आकर्षक, नख से शिखा तक तरंगित सौन्दय का पारवार, अनुपम, अपूर्व देहयष्टि लेकिन मदहोश करने वाले सौन्दर्यान्वित शरीर का अन्तिम हश्र क्या है? चैतन्य आत्मा जैसे ही देह का त्याग करती है, सम्पूर्ण शरीर अपावन हो जाता है। इस शरीर का सम्मान तब तक है जब तक इसमें वह अदृश्य तत्त्व विद्यमान है। बड़े–बड़े राजा–महाराजा जिनके सामने लोग सिर झुकाते है उनकी जी हजूरी करते हैं, लेकिन चैतन्य आत्मा के परित्याग के साथ ही, हर आक, आभा और हुमस तिरोहित हो जाती है। यही जीवन का सत्य है। इसे कोई निराशावादी चिंतन भी कह सकता है। जीवन की अन्तिम गति में पूर्व जीवन का सम्पूर्ण भाव तिरोहित हो जाता है। बचती है – केवल आहें। यही सत्य ओर और यही यथार्थ है।

इसी जीवन को मनुष्य समझता नहीं है वह झूठे, पाखण्डी साधु, संतों के चंगुल में फंस जाता है। सुन्दरदास को कपटी मुनियों से बहुत डर लगता है वे कहते हैं कि –

"एक ब्रह्म मुख सौ बनाइ करि कहत है,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 3,March- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अन्तहकरन तौ किारिनि सौं भरयो है।

जैसे ठग गोबर सौं कूषौ भरि राखत है,

सेर पाँच धृत लैकैं ऊपर ज्यौं करयो है।।

जैसें कोउ भांड़े मांहि प्याज कौं छिपाइ राखै,

चीथरा कपूर कौ लै मुख बांध धरयौ है,

सुंदर कहत ऐसै ज्ञानी हैं जगत मॉहि

तिनको तौ देखी करि मेरौ मन डरयो है।।"[7]

संत सुन्दरदास ने क्रियाओं के प्रति अपनी तीखी प्रतिक्रियाएं व्यक्त की हैं। वह बड़े ही सात्विक और शालीन भक्त थे। प्रदर्शनों को उन्होंने सर्वथा हेय समझा। यद्यपि आलोचनाओं के प्रति उनकी उतनी आस्था नहीं दीख पड़ती, आर उनकी आलोचनाओं में कबीरदास जितनी चुभन व व्यंग्य नहीं है, पर उनमें शालीनता से अस्वीकार करने की प्रकृत्ति है। दूसरे सम्प्रदायों व मतों की उन्होंने समालोचना की है, पर उनमें न खीझ है, और न हेयता का भाव। यह निर्विकार भाव से अपने विचार प्रस्तुत करते जाते ह। वे एक सुसंस्कृत व पुष्ट व्यक्तित्व के सन्थ थे, असली वैरागी और ज्ञानी। वह ज्ञान के इतने दिवाने थे, कि बाह्याचार की निंदा करते हुए स्पष्ट कहते हैं कि –

"आगे कछू नहि हाथ परयो पुनि पीछे विगारि गए निज मौना।

ज्यों कोइ कामिनी कंतहि माटि चलो संग औराहिं दे"ा सलोना।।

सोऊ गयौ तजि कै तत्काल कहै, न बनै जु रही मुख मौना।

तैसे म्हे सुन्दर ज्ञान बिना, सब छाँड़ि भये नर भांड़ कै दौना।।[8]

संत सुन्दरदास इस बैरागी जीवन का सार्थक व अर्थपूर्ण मानते हैं वे इसे अपने गुरू

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 3,March- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

दाइदयाल की कृपा मानते हैं। जिन्होंने संत सुन्दरदास को राम नाम का उपदेश दिया, जिससे मन का भ्रम दूर हो गया। उन्होंने ज्ञान भक्ति और वैराग्य को दृढ़ीभूत किया। मिथ्या माया रूपी साँपिनी ने सारे ससार को ग्रस लिया है। मुख से मंत्रों का उच्चारण कर, एक मृतक को जीवन दे दिया। सूर्य से अंधकार नष्ट हो गया। गुरु शशि के समान शीतल है, उसने रसामृत का पान कराया।

"राम नाम उपदेश दे भ्रम दूर उड़ाया।

ज्ञान भक्ति बैराग छू, एक तीन दृढ़ाया।।

मुख तै मंत्र उचारि कै उनि मृतक जिवाया।।

रवि ज्यों प्रकट प्रकाश में जिनि तिमिर मिटाया।।

शशि ज्यों शीतल है सदा रस अमृत पिवाया।।"[9]

जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है अर्थात् विनाश प्रकृति का गुण है। इस बात से मनुष्य अपरिचित होकर अपने आप को अमर समझने लगता है। वह माया के मोह में डूब जाता है। अपने परिवार व प्रियजनों को देखकर मनुष्य अपने मूल उद्देश्य से भटक जाता है। अपने स्वार्थ में डूबे लोग यह भूल जाते हैं कि इस दुनिया में कोई किसी का साथ नहीं देता। यह शरीर तो प्रतिपल परिवर्तित होता रहता है, भला यह अंजलि से भरा हुआ जल कितने समय तक टिक पाएगा? इसलिए मनुष्य यह सब जानकर मुक्ति के प्रयास मे लग जाना चाहिए। यह शरीर एक निश्चित रूप से खण्डित–विखण्डित हो जाएगा, इसे मृत्यु रूप संकट आकर घेर लेगा।

यह संसार आत्ममुग्ध, मोह से गाफिल, इधर–उधर देख रहा है और उधर काल मृत्यु के तीर लिए निशाना लगाए है। पैसा–पैसा जोड़कर बहुत बड़ी सम्पत्ति बना ली किंत वास्तव में तो यह कुछ है ही नहीं। जब तुम धर्मराज के सामने अपने कर्मों का लेखा–जोखा दोगे तो

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 3,March- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इस सम्पत्ति का कोई मूल्य नहीं होगा वहाँ।

जब मनुष्य मन से वह कर्म से वैरागी हो जाता है तो उसे सुख–दुःख में कोई अन्तर नजर नहीं आता। उसके लिए सभी परिस्थितिया समान हैं। इसे मुक्ति के मार्ग के अतिरिक्त और कोई मार्ग दिखायी ही नहीं पड़ता। संत सुन्दरदास सभी मनुष्य को संदेश देते है कि जब माया से मोह छुट जाता है तो मनुष्य वैरागी हो जाता है और ऐसी ही मनुष्य मुक्ति का अधिकारी होता है।

निष्कर्ष :

संत सुन्दरदास का साहित्य शुद्ध रूप से आत्मज्ञान और ब्रह्मज्ञान को दृष्टि पथ में रखकर लिखा गया है। वह अत्यन्त परिष्कृत विचार, कर्म और साधना में विश्वास करते थे। ब्रह्मज्ञान प्राप्ति की सबसे बड़ी बाधा मानवीय प्रकृति है। प्रकृति अर्थात् त्रिगुणात्मक माया। सुन्दरदास इस माया से मुक्ति दिलाने वाले मार्ग को वैराग्य मार्ग कहते है। वे वैराग्य की स्थिति मन की शांति में बताते हैं। जब मनुष्य का मन उसके अनुसार कार्य करने लग जाता है तभी से वैराग्य का मार्ग आरम्भ हो जाता है। इस सृष्टि में 84 लाख योनियां है किंतु मनुष्य योनी को मोक्ष का अधिकारी माना जाता ह क्योंकि ईश्वर ने जन्म–जन्म के बंधन से मुक्ति पाने का सामर्थय केवल मनुष्य को दिया। इस सामर्थ्य को प्राप्त के मार्ग को संत सुन्दरदास वैराग्य मार्ग कहते हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 3,March- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. सुंदर ग्रंथावली, सं0 पुरोहित हरिनारायण बी. ए., स्वप्न विचार, पृ0 78
2. वही0, पृ0 166
3. वही0, पृ0 68
4. कैलाशनाथ पाण्डेय, संत सुन्दरदास, पृ0 119
5. वही, पृ0 119
6. सुंदर गथावली, सं0 पुरोहित हरिनारायण बी0 ए0, चाणक को अंग, पृ0 103
7. सुंदर विलास, सं0 किशारी लाल गुप्त, पृ0 163
8. वही, 78
9. सुंदर ग्रंथावली, सं0 पुरोहित हरिनारायण बी0 ए0, पृ0 306